Toppersnotes®
Unleash the topper in you

बिहार

बी.एड. (B.Ed.)

संयुक्त प्रवेश परीक्षा

भाग - 4

विद्यालय में शिक्षण - अधिगम का वातावरण

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	विकास की अवधारणा	1
2	बाल विकास के आयाम	18
3	बालकेंद्रित एवं प्रगतिशील शिक्षण की अवधारणा	38
4	अधिगम	44
5	अधिगम वक्र	62
6	शिक्षण अधिगम की व्यूह रचनाएँ या रणनीतियां	66
7	शिक्षण और अधिगम की मूलभूत प्रक्रियाएँ	76
8	अधिगमकर्ता का मूल्याकंन	100
9	सीखने का मूल्यांकन	106
10	सीखने की क्रिया : बच्चे कैसे सोचते और सीखते हैं	121
11	रुचि, चिंतन, कल्पना एवं तर्क	126
12	शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशासन	139
13	संप्रेषण कौशल	153
14	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF) – 2005	164
15	शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009	170
16	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020	184

1
CHAPTER

विकास की अवधारणा

अभिवृद्धि की अवधारणा एवं अर्थ

- **अभिवृद्धि** शब्द **अभि** + **वृद्धि** से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है – **"चारों ओर फैल जाना।"**
- **अभिवृद्धि** का सामान्य अर्थ होता है - **आगे बढ़ना।**
- **बालक** की अभिवृद्धि के सन्दर्भ में इसे उसके शरीर के आन्तरिक एवं बाह्य अंगों के आकार, भार और इनकी कार्यक्षमता में होने वाली वृद्धि के रूप में देखा जाता है।
- मानव शरीर में यह वृद्धि एक आयु तक (18-20 वर्ष) ही होती है, उसके बाद इन अंगों में वृद्धि नहीं होती है अर्थात् इस आयु तक व्यक्ति पूर्ण वयस्क हो जाता है। इस वृद्धि को देखा-परखा जा सकता है और इसका मापन भी किया जा सकता है।
- यह एक **क्रमिक प्रक्रिया** है जो गर्भावस्था से लेकर परिपक्वता प्राप्त करने तक चलती है।
- **परिपक्वता:** शरीर में होने वाला स्वाभाविक जैविक विकास, जो बिना प्रशिक्षण या अनुभव के स्वतः होता है।
  - ✓ **हल के अनुसार,** जीव में विकास तथा वर्धन का पूरा होना परिपक्वता कहलाता है।
- **अभिवृद्धि** में शरीर एवं कोशिकाओं की **लम्बाई, भार तथा आकार** में वृद्धि होती है।
- यह प्रक्रिया **दृश्य और मापन योग्य** होती है। इसे देखा, तौला और मापा जा सकता है।
- **अभिवृद्धि एक निश्चित काल तक** ही होती है - सामान्यतः 18-20 वर्ष की आयु तक।
- **मानव शरीर की कार्यक्षमता और अभिवृद्धि की सीमा** इसकी दो विशेषताएँ हैं।
- **अभिवृद्धि के साथ विकास** की प्रक्रिया भी निरंतर चलती रहती है।

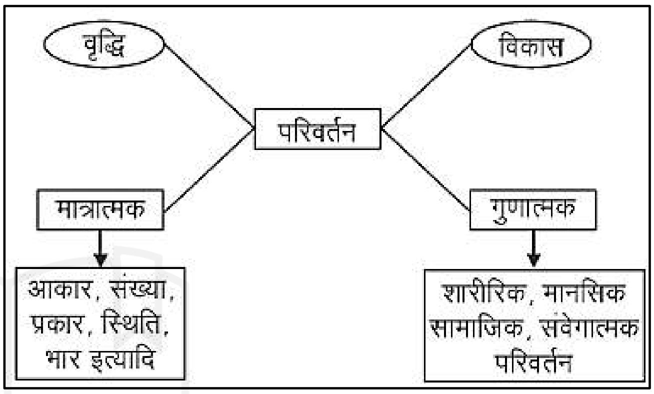

महत्वपूर्ण परिभाषा

फ्रैंक के अनुसार, "अभिवृद्धि से तात्पर्य कोशिकाओं में होने वाली वृद्धि से होता है, जैसे– लम्बाई और भार में वृद्धि।"

लाल एवं जोशी के अनुसार, "मानव अभिवृद्धि से तात्पर्य उसके शरीर के बाह्य एवं आंतरिक अंगों के आकार, भार एवं कार्यक्षमता में होने वाली उस वृद्धि से है, जो गर्भकाल से परिपक्वता तक चलती है।"

क्रो एंड क्रो के अनुसार, वृद्धि शारीरिक परिवर्तनों से संबंधित है, जबकि विकास में व्यवहारिक परिवर्तन भी शामिल होते हैं जो पर्यावरण से प्रभावित होते हैं।

विकास

- विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जो **सतत्** चलती है तथा जिसमें **गुणात्मक परिवर्तन** एवं **परिमाणात्मक (मात्रात्मक)** परिवर्तन दोनों सम्मिलित होते हैं।

- ✓ **गुणात्मक परिवर्तन:** कार्यशैली, कार्यक्षमता
- ✓ **परिमाणात्मक परिवर्तन:** लंबाई, वजन एवं आकार

➢ **सतत्:** सतत् का अर्थ है लगातार चलना अर्थात् पीछे की अवस्था पर पुनः ध्यान नहीं देना।

वृद्धि (Growth) < विकास (Development)

वृद्धि (Growth) → परिपक्वता (Maturity) के बाद रुक जाती है।

विकास (Development) → गर्भ से कब्र तक होता है। Womb to tomb

मुख्य बिंदु:

➢ **विकास** की प्रक्रिया में होने वाले सभी परिवर्तन एक जैसे नहीं होते –

- ✓ प्रारंभिक अवस्था में रचनात्मक परिवर्तन होते हैं जो परिपक्वता लाते हैं। जैसे- विकास दर में भिन्नता बच्चों में शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास के विभिन्न पहलुओं में होती है, जिससे एक बच्चा जल्दी और दूसरा बच्चा देर से कुछ कौशल विकसित करता है।
- ✓ प्राथमिक शिक्षा से पहले, शिशुओं में मूल्यों की शिक्षा का विकास कहानियों से होता है।
- ✓ उत्तरार्द्ध में विनाशात्मक परिवर्तन होते हैं जो व्यक्ति को वृद्धावस्था की ओर ले जाते हैं।

➢ **विकास एक क्रमिक परिवर्तन की श्रृंखला** है, जिससे व्यक्ति में नई विशेषताएँ उत्पन्न होती हैं और पुरानी समाप्त हो जाती हैं।

➢ **प्रौढ़ावस्था** में मनुष्य जिन गुणों से सम्पन्न होता है, वे विकास की दीर्घकालिक प्रक्रिया के परिणाम होते हैं।

➢ **रूसो** पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने मानव विकास को विभिन्न चरणों में विभाजित करने का प्रयास किया।

➢ **अर्नोल्ड गेसेल** ने विकास की अवधारणा में **परिपक्वता** पर विशेष ज़ोर दिया।

परिभाषा

हरलॉक के अनुसार, विकास केवल अभिवृद्धि तक ही सीमित नहीं है वरन् वह व्यवस्थित तथा समानुगत परिवर्तन है जिसमें कि प्रौढावस्था के लक्ष्य की ओर परिवर्तनों का प्रगतिशील क्रम निहित रहता है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति में नवीन विशेषताएँ एवं योग्यताएँ प्रकट होती हैं।

मुनरों के अनुसार, विकास परिवर्तन श्रृंखला की वह अवस्था है जिसमें बच्चा भ्रूणावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक गुजरता है, विकास कहलाता है।

जेम्स ड्रेवर के अनुसार, विकास वह दशा है जो प्रगतिशील परिवर्तन के रूप में सतत् रूप से व्यक्त होती है। यह प्रगतिशील परिवर्तन किसी भी प्राणी में भ्रूणावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक होता है। यह विकास तन्त्र को सामान्य रूप में नियन्त्रित करता है। यह प्रगति का मानदण्ड है और इसका आरम्भ शून्य से होता है।

रॉबर्ट हैविंघहर्स्ट के अनुसार, स्वस्थ विकास के लिए प्रत्येक आयु-स्तर पर सीखने योग्य **विकासात्मक कार्यों** की अवधारणा प्रस्तुत की।

ग्रेस जे क्रेग के अनुसार, विकास विभिन्न संरचनाओं और कार्यों के समन्वय एवं एकीकरण की जटिल प्रक्रिया है।

टेबुला रासा का सिद्धांत **जॉन लॉक** द्वारा प्रस्तुत किया गया था, जिसमें यह कहा गया कि बच्चे का मस्तिष्क जन्म के समय **"खाली स्लेट"** होता है, जो जीवन के अनुभवों और शिक्षाओं से भरा जाता है।

समकालीन दृष्टिकोण के अनुसार, बाल विकास बहुआयामी होता है और यह विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत संदर्भों से प्रभावित होता है।

विकास की विशेषताएँ:

- विकास एक **गुणात्मक परिवर्तन** है, जिसमें अभिवृद्धि भी शामिल होती है।
- विकास **जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया** है। जैसे जन्म के समय बच्चा **असामाजिक प्राणी** होता है। और **0-2 वर्ष** की आयु में बच्चे अपने **पर्यावरण के साथ संपर्क, प्रयास और गलतियों** के माध्यम से **आधारभूत कार्यों और कौशलों** को सीखते हैं, जिसे **प्रयत्न और भूल** कहा जाता है।
- विकास बहुआयामी एवं बहुमुखी होता है।
- मनोविज्ञान में विकास को **क्रमिक परिवर्तनों की प्रक्रिया** माना गया है।
- **शारीरिक और मानसिक विकास के बीच गहरा संबंध होता है,** और बच्चों के **स्वास्थ्य और पोषण** का सीधा प्रभाव उनके **संज्ञानात्मक विकास** और **शिक्षा पर पड़ता है**।
- विकास को **मापा नहीं,** बल्कि **अनुभव** किया जा सकता है।
- इसमें **शारीरिक के साथ-साथ मानसिक परिवर्तन** भी होते हैं। **इंद्रियाँ** ज्ञान प्राप्ति की **प्राथमिक प्रक्रियाएँ** हैं, जिनके द्वारा हम अपने **आसपास के वातावरण** को महसूस और समझ सकते हैं, और यही ज्ञान के विकास का आधार बनता है।
- विकास की **गति भिन्न-भिन्न होती है,** और यह विभिन्न अवस्थाओं में अलग-अलग दर से होती है।
- इसके कारण व्यक्ति में **नवीन विशेषताएँ एवं योग्यताएँ प्रकट** होती हैं।
- यह एक **व्यापक प्रक्रिया** है, जो जीवन काल में होने वाले सभी परिवर्तनों को सम्मिलित करती है।
- विकास **वातावरण एवं वंशक्रम** दोनों से प्रभावित होता है।
- विकास की दिशा **सामान्य से विशिष्ट** की ओर होती है।
- विकास में **मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रक्रियाएँ** शामिल होती हैं।

महत्वपूर्ण बिन्दु

- **समग्र विकास** से आशय बच्चों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास से है। शिक्षा इन सभी आयामों के संतुलित विकास में सहायक होती है।

अभिवृद्धि एवं विकास मे अंतर

क्र.सं.	**अभिवृद्धि**	**विकास**
1.	अभिवृद्धि से तात्पर्य मनुष्य के आकार, बनावट एवं भार में होने वाली वृद्धि से है।	विकास से तात्पर्य मानसिक, शारीरिक, सामाजिक एवं चारित्रिक आदि व्यक्तित्वगत परिवर्तनों से होता है।
2.	अभिवृद्धि सीमित होती है तथा परिपक्वता के स्तर तक होती है।	विकास की कोई सीमा नहीं होती है। यह जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती रहती है।
3.	अभिवृद्धि केवल मात्रात्मक होती है।	विकास मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार का है।
4.	अभिवृद्धि क्रमानुसार एवं मापन योग्य रूप से होती है।	विकास का कोई क्रम निश्चित नहीं होता।
5.	अभिवृद्धि प्रायः शारीरिक रूप में दृष्टिगोचर होती है।	विकास दृष्ट एवं अदृश्य दोनों रूपों में होता है।
6.	अभिवृद्धि विकास को प्रभावित करती है।	विकास अभिवृद्धि से बहुत कम ही प्रभावित होता है।
7.	अभिवृद्धि केवल धनात्मक होती है।	विकास धनात्मक एवं ऋणात्मक दोनों होता है।
8.	अभिवृद्धि केवल आनुवंशिक प्रभाव के कारण होती है।	विकास पर आनुवंशिकता के साथ ही वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है।

नोट : सामान्यत: वृद्धि एवं विकास एक दूसरे के पूरक होते हैं ।

विकास के सिद्धान्त

- **निरन्तरता का सिद्धान्त**
  - ✓ बालक का विकास गर्भावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।
  - ✓ शैशवावस्था में समाजीकरण की प्राथमिक संस्थाएँ जैसे परिवार महत्त्वपूर्ण होती हैं, जबकि प्रारंभिक बाल्यावस्था में, समाजीकरण की माध्यमिक संस्थाएँ जैसे विद्यालय और समुदाय भी प्रभावी भूमिका निभाती हैं।
  - ✓ बालक के प्रथम तीन वर्षों में विकास तीव्र गति से होता है जबकि बाद की अवस्था में मंद हो जाता है।
- **समान प्रतिमान का सिद्धान्त**
  - ✓ इस सिद्धान्त का प्रतिपादन गैसेल व हरलॉक ने किया।
  - ✓ इस सिद्धान्त के अनुसार सभी प्राणियों का विकास अपनी जाति के अनुसार ही होता है।
- **व्यक्तिगत भिन्नता का सिद्धान्त**
  - ✓ इस सिद्धान्त के अनुसार बालकों का विकास एक क्रम में होता है लेकिन उनके विकास में व्यक्तिगत भिन्नता होती है। जैसे उच्च सामाजिक स्तर वाले परिवारों के बच्चों को बेहतर पोषण, स्वास्थ्य सेवाएँ और शैक्षिक अवसर मिलते हैं, जिसके परिणामस्वरूप वे स्वस्थ और बेहतर विकसित होते हैं।
- **विकास की विभिन्न गति का सिद्धान्त**
  - ✓ विभिन्न व्यक्तियों के विकास की गति में भिन्नता होती है जो सम्पूर्ण जीवन भर चलती है।
- **विकास क्रम का सिद्धान्त**
  - ✓ बालक का विकास एक निश्चित क्रम में होता है।
  - ✓ जैसे- शैशवावस्था → बाल्यावस्था → किशोरावस्था → युवावस्था → प्रौढ़ावस्था आदि
- **एकीकरण का सिद्धान्त**
  - ✓ बालकों का विकास पहले सम्पूर्ण अंगों का विकास होता है उसके बाद अंगों के भागों का विकास होता है। उसके बाद सभी अंगों का एकीकरण होता है।
- **सामान्य व विशिष्ट प्रतिक्रियाओं का सिद्धान्त**
  - ✓ इस सिद्धान्त के अनुसार बालक का विकास सामान्य प्रतिक्रियाओं से विशिष्ट प्रतिक्रियाओं की ओर होता है।
- **वंशानुक्रम एवं वातावरण की अन्तः क्रिया का सिद्धान्त**
  - ✓ बालक का विकास वंशानुक्रम एवं वातावरण दोनों की अन्तः क्रिया का फल है।
- **परस्पर संबंध का सिद्धान्त**
  - ✓ बालक के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक आदि सभी भागों का विकास एक-दूसरे पर निर्भर करता है।
- **विकास की दिशा का सिद्धान्त**
  - ✓ विकास कोई यादृच्छिक या अव्यवस्थित प्रक्रिया नहीं है बल्कि विकास एक निर्धारित दिशा में चलता है और यह विशिष्ट गुणों को प्राप्त करता है।
  - ✓ बालक का विकास सिर से पैर की ओर होता है। इसके सीरोपुच्छीय सिद्धान्त भी कहते है।

विकास के दो मुख्य दिशात्मक सिद्धांत

1. **सिफालोकॉडल सिद्धांत**
   - ✓ विकास **सिर से पैर की दिशा में** होता है।
   - ✓ अर्थात् बच्चा सबसे पहले सिर और गर्दन को नियंत्रित करना सीखता है, उसके बाद हाथों को और अंत में पैरों को नियंत्रित करता है।

2. **प्रोक्सिमोडिस्टल सिद्धांत**
   - ✓ विकास **शरीर के केंद्र से बाहर की ओर** होता है।
   - ✓ अर्थात् बच्चा पहले धड़ (ट्रंक) और कंधों को नियंत्रित करता है, फिर बाहों को और अंत में उंगलियों को नियंत्रित करना सीखता है।

- **केन्द्रोभिमुखी विकास**
  - ✓ बालक का विकास केन्द्र से बाहर की ओर होता है।
- **वर्तुलाकार विकास का सिद्धान्त**
  - ✓ बालक का विकास एक वर्त की तरह होता है। इसे चक्रीय विकास का सिद्धान्त भी कहते है।
- **गेसेल सिद्धांत**
  - ✓ **परिपक्वता-विकासात्मक सिद्धांत** के रूप में जाना जाता है।
  - ✓ **विकास के कारक :** इस प्रक्रिया में **आंतरिक** और **बाह्य** दोनों प्रकार के कारक शामिल होते हैं:

आंतरिक कारक	**बाह्य कारक**
▪ आनुवंशिकता	▪ पर्यावरण
▪ स्वभाव	▪ पारिवारिक पृष्ठभूमि
▪ व्यक्तित्व	▪ पालन-पोषण की शैली
▪ अधिगम शैली	▪ सांस्कृतिक प्रभाव
▪ शारीरिक एवं मानसिक विकास	▪ स्वास्थ्य की स्थिति
	▪ साथियों और वयस्कों के साथ प्रारंभिक अनुभव

  - ✓ **गेसेल के सिद्धांत की प्रमुख विशेषताएँ**
    1. विकास एक क्रमबद्ध और पूर्वानुमेय प्रक्रिया है।
    2. प्रत्येक बच्चा अपनी गति से विकास करता है।
    3. परिपक्वता विकास का प्रमुख आधार है।
    4. गेसेल पहले सिद्धांतकार थे जिन्होंने विकास के चरणों का व्यवस्थित अध्ययन किया।
    5. उन्होंने यह सिद्ध किया कि **विकासात्मक आयु,** वास्तविक आयु से भिन्न हो सकती है।

<u>**विकासात्मक विधि एवं कार्य**</u>

- **विकासात्मक विधि**
  - ✓ विकासात्मक विधि वह पद्धति है जिसमें किसी व्यक्ति या समूह के विकास का अध्ययन लंबे समय तक किया जाता है।
  - ✓ इसमें यह देखा जाता है कि व्यक्ति समय के साथ शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक तथा भावनात्मक रूप से कैसे विकसित होता है।
  - ✓ पूर्व बाल्यावस्था में बच्चों को समूह में स्वीकार्य व्यवहार और भूमिकाओं की जानकारी माता-पिता तथा भाई-बहनों से मिलती है, जो उनके सामाजिक विकास में सहायक होती है।
- **विकासात्मक कार्य**
  - ✓ विकासात्मक कार्यों की अवधारणा **रॉबर्ट हेविग्हर्स्ट** ने दी थी।
  - ✓ उनके अनुसार, व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक चरण में कुछ विशिष्ट कार्य होते हैं, जिन्हें सफलतापूर्वक पूरा करना आवश्यक होता है ताकि वह अगले चरण में प्रवेश कर सके।
  - ✓ उदाहरण:
    - ▪ बचपन में चलना और बोलना सीखना
    - ▪ किशोरावस्था में आत्म-छवि का निर्माण करना
    - ▪ वयस्कता में पेशा चुनना

संवेदनशील अवधि

- यह वह समय होता है जब किसी विशेष कौशल के विकास के लिए मस्तिष्क सबसे अधिक ग्रहणशील होता है।
- इस अवधि में सीखना अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी और तेज़ होता है।

विकास के सिद्धांत

सिद्धांत	विवरण
निरंतर विकास का सिद्धांत	विकास की प्रक्रिया बिना रुके निरंतर चलती रहती हैं ।
विकास - दिशा का सिद्धांत	विकास की दिशा सिर से पैर की तरफ चलती हैं ।
परस्पर संबंध का सिद्धांत	शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक आदि पहलुओं के विकास में परस्पर सम्बन्ध होना
वैयक्तिक विभिन्नता का सिद्धांत	विकास के प्रत्येक स्वरूप में वैयक्तिक विभिन्नता होती है।
सामान्य व् विशिष्ट प्रतिक्रियाओं का सिद्धांत	विकास सामान्य से विशिष्ट की ओर होता है।
वंशानुक्रम व वातावरण का सिद्धांत	विकास में वंशानुक्रम व वातावरण गुण दोनों की अन्तः क्रिया होती है।
समान पतिमान का सिद्धांत	विकास का क्रम समान होता है।
एकीकरण का सिद्धांत	पहले सम्पूर्ण अंग को फिर अंगों के भागों को चलाना सीखता है।
विकास - क्रम का सिद्धांत	विकास का क्रम निश्चित होता है।

ToppersNotes Unleash the topper in you

मनोविज्ञान

- मनोविज्ञान का जन्म दर्शनशास्त्र से हुआ हैं । प्रारंभ में इसका विकास दर्शनशास्त्र की ही एक शाखा के रूप में था। लेकिन वर्तमान में यह एक विषय के विकसित हो चुका हैं ।
- मनोविज्ञान अंग्रेजी भाषा के शब्द 'साइकोलोजी' **(Psychology)** का हिन्दी रूपान्तर है।
- 'साइकोलोजी' **(Psychology)** शब्द दो शब्दों के जोड़ से बना है अर्थात् 'साईक' **(Psyche)** **(+)** 'लोगोस' **(Logos)** साइक का अर्थ है-आत्मा तथा लोगोस का अर्थ है-विज्ञान अर्थात् इसका अभिप्राय यह हुआ कि 'आत्मा का विज्ञान'।

साईक **(Psyche)** + लोगोस **(Logos)** साईकालोजी **(Psychology)** आत्मा का विज्ञान।

- मनोविज्ञान के जनक अरस्तू को माना जाता हैं ।
- **स्किनर के अनुसार,** "मनोविज्ञान, जीवन की सभी प्रकार की परिस्थितियों में प्राणी की प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। प्रक्रियाओं अथवा व्यवहार का तात्पर्य है-प्राणी की सब प्रकार की गतिविधियाँ, समायोजनाएँ, क्रियाएँ एवं अभिव्यक्तियाँ ।

बाल मनोविज्ञान

- बाल मनोविज्ञान में बालक की स्मृति, कल्पना, स्वभाव, धारण शक्ति, अभिप्रेरणा आदि का अध्ययन किया जाता है।
- बालकों का अध्ययन जब मनोविज्ञान के अन्तर्गत किया जाता हैं तो उसे बाल मनोविज्ञान की संज्ञा दी जाती हैं ।
- ***आधुनिक बाल शिक्षा का जनक*** – जोहान हेनरिक पेस्टालोज़ी **{**क्योंकि उन्होंने बच्चों की शिक्षा को उनकी प्राकृतिक प्रवृत्तियों और विकास के अनुसार देने पर जोर दिया।**}**
- बाल मनोविज्ञान के जनक के रूप में सामान्यतः जीन पियाजे को अधिक मान्यता दी जाती है, क्योंकि उन्होंने बच्चों के मानसिक विकास का वैज्ञानिक अध्ययन किया।
- आधुनिक मनोविज्ञान के जनक → विलियम जेम्स

बाल + मनोविज्ञान - मन (व्यवहार का ज्ञान) = बाल मनोविज्ञान

परिभाषा

क्रो और क्रो के अनुसार, 'बाल मनोविज्ञान वह वैज्ञानिक अध्ययन है जो व्यक्ति के विकास का अध्ययन गर्भकाल की प्रारम्भिक अवस्था से किशोरावस्था तक करता है।"

आइजनेक के अनुसार, "बाल मनोविज्ञान, बालक में मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के विकास से सम्बन्धित विज्ञान है, जो शिशु जन्म पूर्व, जन्म के समय, शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था और परिपक्वावस्था तक बालक में मनोवैज्ञानिक विकास प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है।

जेम्स ड्रेवर के अनुसार, 'बाल मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो प्राणी के विकास का अध्ययन जन्म से परिपक्वावस्था तक करती है।"

बाल विकास

- बाल मनोविज्ञान में बालक का जन्म से लेकर किशोरावस्था तक अध्ययन किया जाता है।
- बाल विकास में बालक का गर्भावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक अध्ययन किया जाता है। इसी कारण **बाल मनोविज्ञान को बाल विकास कहा** जाने लगा।
- बाल विकास की **पूर्व बाल्यावस्था** अवस्था को भाषा अधिगम की **सर्वोत्तम अवस्था** कहा जाता है|
- **बाल विकास** का तात्पर्य उन **जैविक, मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक परिवर्तनों** से है जो **मानव जीवन** में **जन्म से लेकर किशोरावस्था के अंत तक** होते हैं। इन परिवर्तनों में शारीरिक वृद्धि, मानसिक विकास और भावनाओं के साथ-साथ सामाजिक कौशल का विकास भी शामिल होता है।
- प्रारंभिक अवस्था में शिशु अहंकेंद्रित होते हैं, यानी इस आयु में वे स्वयं को केंद्रित करके सोचते हैं। इस अवस्था में, बच्चों का ध्यान मुख्य रूप से अपने आवेगों, इच्छाओं और जरूरतों पर होता है|

बाल विकास का संक्षिप्त इतिहास

- बाल मनोविज्ञान को बाल विकास इसलिए कहा जाने लगा कि उसमें एक पक्ष के अध्ययन की बजाय सभी पक्षों का अध्ययन किया जाता है।
- सर्वप्रथम **1629 ई.** में **कॉमेनियस** ने **'School of Infancy**' की स्थापना कर **बाल विकास का अध्ययन** शुरू किया।

- **पेस्टोलॉजी** ने बाल मनोविज्ञान पर वैज्ञानिक अध्ययन किया तथा अपने साढ़े तीन वर्षीय बेटे पर प्रयोग किये तथा **Baby Biography** की रचना की।
- **प्रेयर** ने बालको पर **Mind of Child** नामक पुस्तक की रचना की।
- 19वीं शताब्दी में **स्टेनले हॉल** ने **Child Study Society** एवं **Child Welfare Organization** नामक संस्थाओं की स्थापना अमेरिका में की ।
- **स्टेनले हॉल** ने **किशोरावस्था** को **"तूफान और तनाव"** के रूप में परिभाषित किया, क्योंकि इस आयु में किशोर **शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक परिवर्तनों** से जूझते हैं।
- **टैने** ने **1869** ई. में **Infant Child Development** नामक पुस्तक की रचना की।
- भारतवर्ष में बालविकास 1887 मे प्रारंभ हुआ और **बाल विकास अध्ययन 1930 ई.** में **कलकत्ता विश्वविद्यालय** में **ताराबाई मोडेक** के प्रयासों से किया गया।

परिभाषाएँ

क्रो एंड क्रो के अनुसार, "बाल मनोविज्ञान एक वैज्ञानिक अध्ययन है जिसमे बालक गर्भावस्था से लेकर किशोरावस्था तक अध्ययन किया जाता है।"

बर्क के अनुसार, "बाल विकास मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें जन्म पूर्व अवस्था से परिपक्व अवस्था तक होने वाले सभी परिवर्तनों को स्पष्ट किया जाता है।"

जेम्स ड्रेवर के अनुसार "जन्म से परिपक्वता तक विकसित हो रहे मानव का अध्ययन किया जाता है।"

आइनजेक के अनुसार, "बाल मनोविज्ञान का संबंध बालक में मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के विकास से है इससे गर्भकालीन, जन्म, शैशावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था और परिपक्वता तक बालक की विकास प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।"

बाल विकास की आवश्यकताएँ

- **बालकों की मनोरचना की जानकारी प्राप्त करने हेतु:** बालकों की मानसिक स्थिति, रुचियाँ, क्षमताएँ एवं समस्याओं को समझने के लिए बाल विकास का अध्ययन आवश्यक है। प्रायः बच्चों का विकास एक सामाजिक-सांकृतिक परिप्रेक्ष्य में होता है।
- **बाल विकास की प्रक्रिया को समझने के लिए:** जन्म से लेकर वयस्कता तक बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक परिवर्तनों की समझ के लिए यह अनिवार्य है। जैसे **खेल** बच्चों के **शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास** के लिए आवश्यक गतिविधियाँ होती हैं, जो उनकी **समस्या समाधान क्षमता, टीम वर्क और सामाजिक संपर्क** को बढ़ावा देती हैं।
- **बाल निर्देशन व परामर्श मे सहायक:** सही दिशा-निर्देश एवं परामर्श देने के लिए बालक की अवस्था व विकास स्तर की जानकारी आवश्यक होती है। एक बालक की शिक्षा व्यक्ति के निर्णयों का उदाहरण है।
- **बालकों के प्रति भविष्यवाणी करने मे सहायक:** बालक के वर्तमान व्यवहार और विकास के आधार पर उसके भविष्य के व्यवहार व व्यक्तित्व की संभावनाओं का आकलन किया जा सकता है।
- **बाल व्यवहार का मार्गान्तरिकरण व नियंत्रण मे सहायक:** बालक के व्यवहार को सकारात्मक दिशा में मोड़ने तथा अनुशासित करने के लिए उसके विकास का ज्ञान आवश्यक है। जैसे **व्यक्तिगत कल्पित** वह स्थिति होती है जिसमें किशोर यह मानते हैं कि उनके **अनुभव और भावनाएँ अन्य सभी से विशिष्ट और अलग** हैं, और उनका जीवन या अनुभव किसी और के जीवन से **अलग** होता है।
- **सामान्य से विशेष का सिद्धांत**: यह दर्शाता है कि शारीरिक विकास में शुरुआत में सामान्य क्रियाएँ होती हैं, और समय के साथ यह विशिष्ट और नियंत्रित क्रियाओं में बदल जाती हैं।

➢ **उद्दीपक विभेदीकरण** वह प्रक्रिया होती है जिसमें बच्चा **एक विशिष्ट उद्दीपक** (जैसे शिक्षक का प्रवेश) के प्रति प्रतिक्रिया करता है और अन्य उद्दीपकों पर प्रतिक्रिया नहीं करता है।

बाल विकास के क्षेत्र

➢ **बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन:** शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था आदि प्रत्येक अवस्था के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व संवेगात्मक विकास का अध्ययन।

➢ **बाल विकास के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन:** शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, संवेगात्मक तथा भाषायी विकास आदि सभी पहलुओं की समग्र समझ।

➢ **बालकों की विभिन्न असमान्यताओं का अध्ययन:** शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं व्यवहारिक विकृतियों या समस्याओं जैसे – मंद बुद्धिता, अंधापन, श्रवण बाधा, व्यवहार विकार, एकाकीपन आदि का विश्लेषण।

➢ **मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का अध्ययन:** मानसिक संतुलन, तनाव प्रबंधन, समायोजन क्षमता, तथा सकारात्मक सोच आदि का अध्ययन।

➢ **बालकों की विभिन्न मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन:** अनुभूति, स्मृति, कल्पना, संवेग, अभिप्रेरणा, निर्णय, सोच आदि मानसिक क्रियाओं की प्रक्रिया का विश्लेषण।

➢ **बालकों की रुचियों का अध्ययन:** बालकों की व्यक्तिगत पसंद-नापसंद, झुकाव एवं अभिरुचियों का अध्ययन, जिससे उनकी क्षमताओं का विकास संभव हो।

➢ **बालकों की वैयक्तिक भिन्नताओं का अध्ययन:** बुद्धि, अभिरुचि, अभिक्षमता, स्वभाव, सीखने की गति आदि में पाई जाने वाली भिन्नताओं का मूल्यांकन।

➢ **बालकों के व्यक्तित्व का मूल्यांकन:** बालकों के व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों जैसे – आत्मविश्वास, नेतृत्व, समायोजन, व्यवहार आदि का निरीक्षण एवं परीक्षण।

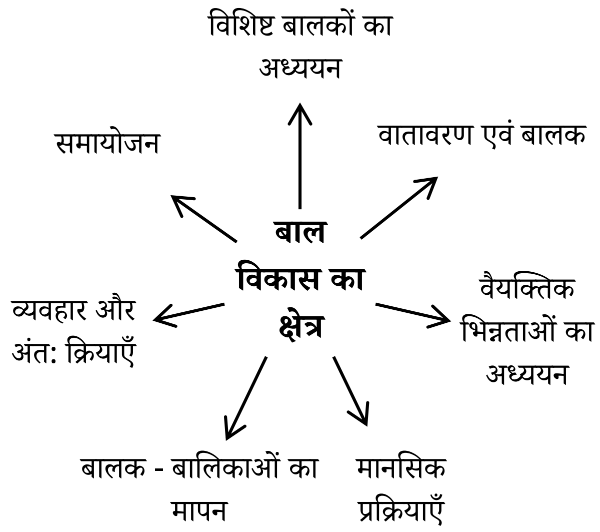

बाल विकास की आवश्यकता

➢ बाल मनोविज्ञान बच्चों के भविष्य की उचित रूपरेखा प्रस्तुत करता है, जिससे शिक्षक और अभिभावक उनकी अधिगम क्षमता का सही विकास कर सकते हैं। किस अवस्था में कौन-सी क्षमता का विकास करना चाहिए, यह अवस्थानुसार विकास को समझने पर ही संभव है।

➢ उदाहरण के लिए, बच्चे को चलना तभी सिखाना चाहिए जब वह उस अवस्था के लिए तैयार हो; अन्यथा परिणाम विपरीत हो सकते हैं।

➢ **बाल विकास शिक्षकों के लिए निम्न प्रकार से आवश्यक है**

बाल विकास की आवश्यकता

- निर्देशन एवं परामर्श में सहायक
- व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ज्ञान
- बाल विकास की विभिन्न प्रक्रिया को समझने में सहायक
- विशिष्ट बालकों के शिक्षण में सहायक
- शिक्षण अधिगम का वातावरण निर्माण में सहायक

बाल विकास के अध्ययन का महत्व

- **विकासात्मक क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त होना:** बाल विकास के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि बालकों में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भाषायी और संवेगात्मक विकास कैसे क्रमिक रूप से होता है। इससे शिक्षकों, अभिभावकों और शिक्षाविदों को यह समझने में सहायता मिलती है कि किस अवस्था में बालक को किस प्रकार की सहायता और गतिविधियों की आवश्यकता है। इसी प्रकार खेल बच्चों के संचालनात्मक और सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण होता है क्योंकि यह शारीरिक कौशल, इंद्रिय विकास और समस्या समाधान को बढ़ावा देता है।
- **बाल पोषण विधियों का ज्ञान:** शारीरिक विकास के साथ-साथ संतुलित पोषण भी बालक की वृद्धि और स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। बाल विकास के अध्ययन से बालकों की आयु, विकास स्तर और आवश्यकताओं के अनुसार उचित पोषण पद्धतियों की जानकारी प्राप्त होती है, जिससे शारीरिक दुर्बलताओं और बीमारियों से बचाव संभव हो पाता है।
- **व्यक्तिगत भिन्नताओं की जानकारी प्राप्त होना:** हर बालक अलग होता है – उसकी रुचियाँ, क्षमताएँ, सीखने की गति और सोचने की शैली भिन्न होती है। बाल विकास का अध्ययन हमें इन वैयक्तिक भिन्नताओं को पहचानने और स्वीकार करने में सहायता करता है, जिससे हर बालक को उसकी आवश्यकतानुसार शिक्षा एवं मार्गदर्शन प्रदान किया जा सके।
- **विकास की अवस्थाओं का ज्ञान:** बाल विकास अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि बालकों का विकास विभिन्न अवस्थाओं में कैसे होता है – जैसे शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था आदि। प्रत्येक अवस्था के भिन्न-भिन्न लक्षणों और आवश्यकताओं को समझकर अभिभावक और शिक्षक बालकों की उचित देखभाल कर सकते हैं।
- **बालकों के प्रशिक्षण और शिक्षण मे उपयोगी:** बाल विकास का ज्ञान शिक्षक को यह निर्णय लेने में सहायक होता है कि किस उम्र में कौन-सी विषयवस्तु, शैक्षिक विधि और गतिविधियाँ उपयुक्त होंगी। यह शिक्षण को अधिक प्रभावशाली, वैज्ञानिक और बालक-केंद्रित बनाता है।
- **बालकों के व्यक्तित्व निर्माण मे सहायक:** एक संतुलित और सकारात्मक व्यक्तित्व का निर्माण बाल्यावस्था में ही प्रारम्भ होता है। बाल विकास के अध्ययन से यह समझने में मदद मिलती है कि कौन-से कारक व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं और किस प्रकार उचित वातावरण, प्रशिक्षण, अनुशासन और अभिप्रेरणा द्वारा बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास संभव है।

विकास की अवस्थाएँ

- प्रत्येक अवस्था की अपनी विशिष्ट विशेषताएँ होती हैं, जैसे - युग्मनज से भ्रूण और फिर गर्भस्थ शिशु (fetus), शिशु अवस्था (नवजात शिशु का सिर उसके शरीर की कुल लंबाई का लगभग 25 प्रतिशत होता है, जो उम्र के साथ धीरे-धीरे संतुलित हो जाता है), बाल्यावस्था, किशोरावस्था आदि।

- **जेम्स ट्रैवर के अनुसार,** " बालविकास में जन्म से परिपक्वता तक विकसित हो रहे मानव का अध्ययन किया जाता है।'
- **संवेदनशील अवधि:** संवेदनशील अवधि वह विशेष समय होता है, जब बच्चा किसी विशेष प्रकार के अधिगम या उद्दीपन को ग्रहण करने के लिए सबसे अधिक तैयार और संवेदनशील होता है।
- **सामान्यत: विकास की 04 अवस्था होती हैं जो कि निम्नलिखित हैं** –

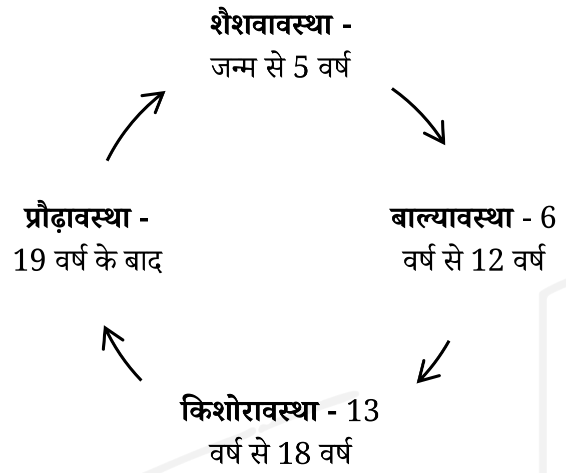

- **कॉलसैनिक के अनुसार**
  - ✓ शैशव - जन्म से 3/4 सप्ताह
  - ✓ उत्तर शैशव - 2 वर्ष तक
  - ✓ पूर्व बाल्यावस्था - 2 से 6 वर्ष
  - ✓ मध्य बाल्यावस्था - 6 से 9 वर्ष
  - ✓ उत्तर बाल्यावस्था - 9 से 12 वर्ष
  - ✓ किशोरावस्था - 12 से 21 वर्ष
- **हरलॉक के अनुसार विकास की अवस्थाएँ**
  - ✓ गर्भावस्था - गर्भधारण से जन्म तक
  - ✓ शैश्वावस्था - जन्म से 14 दिन तक
  - ✓ बचपनावस्था - 14 दिन से 2 वर्ष तक
  - ✓ पूर्व बाल्यावस्था - 3 से 6 वर्ष तक
  - ✓ उत्तर बाल्यावस्था - 7 वर्ष से 12 वर्ष तक
  - ✓ वयः संधि - 12 से 14 वर्ष
  - ✓ पूर्व किशोरावस्था - 13-14 वर्ष से 17 वर्ष तक
  - ✓ उत्तर किशोरावस्था - 18 से 21 वर्ष
  - ✓ प्रौढावस्था - 21 से 40 वर्ष
  - ✓ मध्यावस्था - 41 से 60 वर्ष
  - ✓ वृद्धावस्था - 60 के बाद
- **रोस के अनुसार**
  - ✓ शैशवावस्था - 1 से 3 वर्ष
  - ✓ पूर्व बाल्यावस्था - 3 से 6 वर्ष
  - ✓ उत्तर बाल्यावस्था - 6 से 12 वर्ष
  - ✓ किशोरावस्था - 12 से 18 वर्ष तक

विभिन्न अवस्थाओं का सामान्य वर्णन

गर्भकालीन अवस्था:

- यह गर्भधारण से जन्म तक की अवस्था हैं ।
- इस अवस्था की विकास प्रक्रियाओं के अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से **इस अवस्था की तीन उप अवस्थाएँ हैं -**
  - ✓ **बीजावस्था:** यह गर्भधारण से दो सप्ताह की अवस्था हैं ।
  - ✓ **भ्रूणावस्था:** यह दो सप्ताह से 8 सप्ताह तक की प्रक्रिया हैं । इस अवस्था का **जीव भ्रूण** कहलाता हैं । इसमे जीव के मुख्य अंगों का निर्माण होता हैं ।
  - ✓ **गर्भावस्था शिशु की अवस्था :** यह आठ सप्ताह से जन्म से पूर्व तक की अवस्था हैं ।

शैशवावस्था (0 से 5 वर्ष/जन्म से 5 वर्ष):

- यह जन्म से 14 दिनों की अवस्था हैं । इस अवस्था मे शिशु को नवजात शिशु की संज्ञा दी जाती हैं ।

परिभाषा

- **थार्नडाइक के अनुसार,** "3 से 6 वर्ष की आयु का बालक प्रायः अर्द्ध स्वप्न की अवस्था में रहते है।"

Toppersnotes Unleash the topper in you

- **फ्रायड के अनुसार, "**व्यक्ति को जो कुछ भी बनना होता है वह चार-पाँच वर्षों में बन जाता है।"
- स्ट्रेंग **के अनुसार,** "जीवन के प्रथम दो वर्षों में बालक अपने भावी जीवन का शिलान्यास करता है।"
- गुड **एनफ के अनुसार,** "व्यक्ति का जितना विकास होता है। उसका आधा 3 वर्ष में हो जाता है।"
- **वेलेन्टाइन के अनुसार,** ”शैशवावस्था सीखने का आदर्शकाल है।”
- गैसल **के अनुसार,** "प्रारम्भिक 6 वर्षों का विकास बाद के 12 वर्ष से भी दुगुना विकास होता है।"
- ब्रिजेज **के अनुसार,** "दो वर्ष की उम्र तक बालक में सभी संवेगों का विकास हो जाता है।"
- **क्रो एंड क्रो के अनुसार,** "20 वी शताब्दी को बालक की शताब्दी कहा"।
- **रूसो के अनुसार,** ”बालक के हाथ पैर व आँख उसके प्राथमिक शिक्षक होते है।”
- ड्राइडेन **के अनुसार,** “सर्वप्रथम हम हमारी आदतों का निर्माण करते बाद में आदतें हमारा निर्माण करती है।”
- **बिगगी और हंट** ने किशोरावस्था के बारे में यह कहा कि इसका सबसे बड़ा लक्षण 'परिवर्तन' है, जो शारीरिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से होता है।

शैशवावस्था की विशेषताएँ

- शारीरिक विकास की तीव्रता
- मानसिक विकास की तीव्रता
- कल्पना की सजीवता
- आत्म-प्रेम (स्वमोह) की अवस्था
- नैतिक गुणों का प्रारम्भिक विकास
- मूल प्रवृत्तियों पर आधारित व्यवहार
- अनुकरण द्वारा सीखने की प्रक्रिया
- जिज्ञासा प्रवृत्ति
- दोहराने की प्रवृत्ति
- अंतर्मुखी व्यक्तित्व
- संवेगों का प्रदर्शन
- काम-शक्ति का प्रारम्भिक प्रदर्शन
- खिलौनों में अधिक रुचि
- प्रिय लगने वाली अवस्था
- प्रारम्भिक विद्यालय हेतु तैयारी की आयु
- भाषाई कौशलों का विकास
- दूसरों पर निर्भरता

शैशवावस्था के उपनाम

- सीखने का आदर्श काल — वेलेन्टाइन
- जीवन का महत्वपूर्ण काल
- भावी जीवन की आधारशिला
- अनुकरण द्वारा सीखने की अवस्था
- खिलौनों की आयु
- पूर्व-प्राथमिक विद्यालय की आयु
- पराधीनता की अवस्था
- अतार्किक चिंतन की अवस्था
- खतरनाक काल
- बौद्धिक विकास की प्रारम्भिक अवस्था *(“बक्की” को शुद्ध किया गया)*
- बादशाह की अवस्था
- सीखने का स्वर्ण काल
- नामकरण विस्फोट की अवस्था
- कल्पना-लोक में विचरण की अवस्था

बचपनावस्था:

- एक वर्ष की आयु तक बच्चे का वजन सामान्यतः जन्म के वजन का लगभग तीन गुना हो जाता है, जो उसके शारीरिक विकास और स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण संकेत है।
- यह अवस्था लगभग 2 सप्ताह से 2 वर्ष तक की होती है। इस अवस्था में बालक पूर्णतः असहाय होता है और अपनी आवश्यकताओं के लिए दूसरों पर निर्भर रहता है। इस अवधि में विकास की गति अत्यंत तीव्र होती है।
- बचपन के अनुभवों में आर्थिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक भिन्नताएँ पाई जाती हैं, जो बच्चों के विकास और उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करती हैं।
- मध्य बचपन में बच्चे सामाजिक भूमिका की अपेक्षा सामूहिक खेलों, शारीरिक कौशल और सामाजिक सहयोग पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं।

नवजात शिशुओं में प्रमुख प्रतिवर्ती अवस्थाएँ		
प्रतिवर्त	**विवरण**	**विकासात्मक क्रम**
रूटिंग अवस्था	गाल को छूने पर सिर को घुमाना एवं मुख खोलना।	3 से 6 माह में विलुप्त हो जाती है।
मोरों अवस्था	यदि तीव्र शोर होता है तो बच्चा अपनी कमर को झटका देता है, हाथ-पैर फैला लेता है और फिर सिकोड़कर अपनी छाती के पास लाता है जैसे वह कुछ पकड़ रहा हो।	3 से 7 माह में विलुप्त हो जाती है (यह स्थिति शोर के प्रति अनुक्रिया को दर्शाती है)
पकड़ना	बच्चे की हथेली को स्पर्श करने अथवा कोई वस्तु रखने पर यदि वह वस्तु पकड़ लेता है तो उसकी उंगलियाँ अत्यंत दृढ़ता से लिपट जाती हैं।	3 से 4 माह में विलुप्त हो जाती है (इसके पश्चात यह स्वैच्छिक हो जाती है)।
बेबिन्सकी अवस्था	यदि बच्चे के पैर के तलवे को ठोका जाता है तो पैर की उंगलियाँ ऊपर की ओर जाती हैं और फिर आगे की ओर मुड़ जाती हैं।	8 से 12 माह में विलुप्त हो जाती है।

बाल्यावस्था (06 से 12 वर्ष):

- यह अवस्था तीन वर्ष के प्रारम्भ से तेरह - चौदह वर्ष तक की अवस्था हैं । समकालीन सिद्धान्तकार 'बाल्यावस्था' को एक सामाजिक संरचना मानते हैं।
- सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों के आधार पर बाल्यावस्था के अनुभव भिन्न होते हैं, जो बच्चे के विकास और सामाजिक पहचान को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ संस्कृतियों में किशोर लड़कियों में मासिक धर्म की शुरुआत का उत्सव मनाया जाता है, जबकि अन्य में इसे निजी रखा जाता है।
- बाल्यावस्था के संक्रमण में कठिनाइयाँ विकास में देरी का कारण बन सकती हैं, क्योंकि यह शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है।
- कोल और ब्रूस ने इसे **'संवेगात्मक विकास का अनोखा काल'** कहा है, क्योंकि इस अवधि में बच्चे भावनात्मक रूप से परिपक्व होने की प्रक्रिया से गुजरते हैं।

परिभाषा

कोल एवं ब्रूस के अनुसार, "बाल्यावस्था जीवन का अनोखा काल है।"

रास के अनुसार, "बाल्यावस्था को मिथ्या या छद्म परिपक्वता का काल कहा है।"

स्ट्रेंग के अनुसार, "ऐसा शायद ही कोई खेल हो जिसे बालक 10 वर्ष की उम्र मे ना खेला हो।"

किल पेट्रिक के अनुसार, "बाल्यावस्था को प्रतिद्वन्दात्मक समाजीकरण का काल कहा है।"

बर्ट के अनुसार के अनुसार, "बाल्यावस्था में भ्रमण व साहसिक कार्य की प्रवृति में वृद्धि होती है।"

ब्लेयर, जोन्स के अनुसार, "शैक्षिक दृष्टिकोण से बाल्यावस्था से अधिक जीवन में कोई महत्वपूर्ण अवस्था नहीं है।"

एटकिन्सन के अनुसार, "बाल्यावस्था जीवन का सबसे आनन्ददायक काल है।"

हॉर्नी के अनुसार, मौलिक दुश्चिन्ता के संप्रत्यय का विकास बाल्यावस्था में होता है।

<u>बाल्यावस्था की विशेषताएँ</u>

- शारीरिक विकास में स्थिरता
- मानसिक विकास में स्थिरता
- वास्तविक जगत से संबंधित
- समूह भावना का विकास
- नैतिक गुणो का विकास
- संग्रह करने की प्रवृति
- रूचियों में परिवर्तन
- बहिर्मुखी व्यक्तित्व
- वैचारिक क्रिया की अवस्था
- नये कौशलों एवं क्षमताओ के विकास की वृद्धि
- स्थूल संक्रियात्मक अवस्था
- अदला-बदली की भावना
- हीन भावना का शिकार
- पक्षपात की भावना
- परिश्रम हीनता
- चोरी करना, झूठ बोलना, झगड़ा करना आदि
- जिज्ञासा की प्रबलता
- निरूद्देश्य भ्रमण की प्रवृति
- काम प्रवृति की न्यूनता
- प्रतीकात्मक नाटक
- वे वीर हैं की भावना का विकास होना|

बाल्यावस्था के उपनाम

- मूर्त चिंतन की अवस्था
- प्राथमिक विद्यालय की अवस्था
- शैक्षणिक दृष्टि से महत्वपूर्ण काल
- टोली / समूह की अवस्था
- वस्तु संग्रहण की अवस्था
- मिथ्या परिपक्वता का काल
- छद्म परिपक्वता का काल
- नेता बनने की इच्छा
- वैचारिक अवस्था का काल
- संग्रह करने की प्रवृत्ति
- गंदी आयु (Dirty Age)
- सारस अवस्था

- इस अवस्था को अध्ययन की सुविधा हेतु दो भागों मे बांटा गया हैं –

अवस्था	**विवरण**
पूर्व बाल्यावस्था (2–6 वर्ष)	इस अवस्था में प्यार, देखभाल और समृद्ध अनुभव आवश्यक होते हैं। बच्चे कल्पनाशील खेलों में भाग लेते हैं। यह भाषा विकास की संवेदनशील अवधि होती है। 3–4 वर्ष की आयु में बच्चे अधिक आत्मनिर्भर और सहज हो जाते हैं

	तथा अलगाव की चिंता कम हो जाती है। इसे "खिलौनों की आयु" भी कहा जाता है, जहाँ खेल के माध्यम से शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास होता है।
मध्य बाल्यावस्था	इस अवस्था में बच्चे नियमों के साथ खेलों में भाग लेने लगते हैं। उनकी शारीरिक (एथलेटिक) क्षमताओं का विकास होता है तथा तार्किक सोच में वृद्धि होती है, जो अभी मूर्त अनुभवों तक सीमित रहती है।
उत्तर बाल्यावस्था	इस अवस्था में जिज्ञासा, सृजनशीलता, अनुकरण और नई प्रवृत्तियों का विकास होता है। बच्चे सामाजिक नियमों और संरचनाओं को समझते हैं तथा परिवार के बाहर अन्य व्यक्तियों के साथ जुड़ते हैं। वे पहली बार अकेले सामाजिक वातावरण में प्रवेश कर विद्यालय जाना शुरू करते हैं।

वय संधि या पूर्व किशोरावस्था:

- यह उत्तर बाल्यावस्था और किशोरावस्था के मध्य का चरण है, जिसमें दोनों अवस्थाओं के लगभग दो-दो वर्ष शामिल होते हैं। इसी कारण इसे **मिश्रित अवस्था** कहा जाता है।
- इस अवस्था में यौन अंगों का विकास प्रारंभ होता है तथा शारीरिक और मानसिक विकास की गति बाल्यावस्था की तुलना में अधिक तीव्र हो जाती है।

किशोरावस्था (12 से 18 वर्ष तक):

- **किशोरावस्था** अंग्रेजी शब्द *Adolescence* का हिन्दी रूपांतरण है, जिसका अर्थ "परिपक्वता" या "विकास की ओर बढ़ना" होता है। यह शब्द लैटिन भाषा के *Adolescere* से लिया गया है।
- यह अवस्था लगभग **14–15 वर्ष से 21 वर्ष** तक मानी जाती है।
- किशोरावस्था का एक अर्थ "अध्ययन करना/सीखना" भी माना जाता है। यौवनारंभ के समय किशोरों में शारीरिक और मानसिक परिवर्तनों के कारण विद्रोह, बेचैनी तथा स्वतंत्रता की भावना जैसी अभिव्यक्तियाँ दिखाई देती हैं, जबकि निष्क्रिय (गतिहीन) व्यवहार कम होता है।
- किशोरावस्था में **नायक-पूजा** की प्रवृत्ति देखी जाती है, जिसमें किशोर अपने आदर्श व्यक्तित्वों से प्रेरणा प्राप्त करते हैं और उनसे जीवन के लिए मार्गदर्शन की अपेक्षा करते हैं।
- यह एक विकासात्मक चरण है, जिसमें शारीरिक, मानसिक और सामाजिक परिपक्वता की प्रक्रिया होती है। इस अवधि में बच्चे एच.एस.सी. परीक्षा जैसी महत्वपूर्ण शैक्षिक परीक्षाओं में भी भाग लेते हैं।
- **स्वायत्तता** इस अवस्था की एक प्रमुख विशेषता है, जिसमें व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता को अनुभव करता है तथा अपने निर्णयों और कार्यों के लिए उत्तरदायी बनता है। यह एक प्रकार का सामाजिक परिवर्तन भी है।
- **ए. टी. जर्सिल्ड** के अनुसार, किशोरावस्था वह विकासात्मक चरण है जिसमें लड़के और लड़कियाँ शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक तथा सामाजिक रूप से प्रौढ़ावस्था की ओर अग्रसर होते हैं।
- **पूर्व किशोरावस्था** → लगभग 17 वर्ष तक की अवस्था
- **उत्तर किशोरावस्था** →17 से 21 वर्ष तक की अवस्था
- किशोरावस्था में सामान्य समस्याओं में माता-पिता के साथ संघर्ष, मनोदशा में परिवर्तन तथा जोखिम उठाने की प्रवृत्ति शामिल होती है, जबकि अंतरंगता का भय इस आयु में सामान्यतः प्रमुख समस्या नहीं होता।

ToppersNotes
Unleash the topper in you

- इस अवस्था में समायोजन की समस्या भी सामान्य होती है, क्योंकि किशोर अपनी आत्म-परिभाषा और सामाजिक पहचान को लेकर प्रश्न करते हैं तथा सामाजिक और मानसिक परिवर्तनों के साथ तालमेल बैठाने में कठिनाई अनुभव करते हैं।
- इसके अतिरिक्त, कुछ किशोरों में धोखा देना, चोरी करना तथा कामचोरी जैसी सामाजिक और व्यवहारिक समस्याएँ भी देखी जा सकती हैं। हालांकि, अत्यधिक लापरवाही या तुच्छ बातों पर अत्यधिक निराश होना सामान्य प्रवृत्तियाँ नहीं मानी जातीं।
- किशोरों के साथ कार्य करने में कठोर आदर्शवादी दृष्टिकोण उपयुक्त नहीं होता, क्योंकि यह लचीलेपन की कमी रखता है। इसके स्थान पर लोकतांत्रिक, सहानुभूतिपूर्ण और संतुलित दृष्टिकोण अधिक प्रभावी होते हैं।
- "व्यक्तिगत विशिष्टता" वह मानसिक अवस्था है, जिसमें किशोर अपने अनुभवों को दूसरों से भिन्न और विशेष मानते हैं तथा यह विश्वास करते हैं कि उनका जीवन दूसरों से अलग है।
- **किशोरावस्था** को मनोवैज्ञानिकों ने प्रायः संकटपूर्ण अवस्था माना है।
- **अहम् की पहचान** से आशय किशोर द्वारा अपनी स्वयं की छवि और सामाजिक पहचान का निर्माण करना है।
- **त्वरित/आकस्मिक विकास का सिद्धांत (स्टेनले हॉल):**
  इस सिद्धांत के अनुसार बालक-बालिकाओं में होने वाले परिवर्तन आकस्मिक (अचानक) होते हैं।
- **क्रमिक विकास का सिद्धांत (थार्नडाइक):** इस सिद्धांत के अनुसार किशोरावस्था में होने वाले परिवर्तन अचानक नहीं, बल्कि क्रमिक (धीरे-धीरे) रूप से होते हैं।

क्या आप जानते हैं ?

इस अवस्था को कुछ विद्वान **"स्वर्ण आयु"** भी कहते हैं। इस अवधि में विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण बढ़ता है तथा सामाजिकता और कामुकता इसकी प्रमुख विशेषताएँ होती हैं। इसलिए इस अवस्था में उचित यौन शिक्षा प्रदान करना आवश्यक है।

परिभाषा

वेलेंटाइन के अनुसार, "किशोरावस्था अपराध प्रवृति के विकास का नाजुक समय है।"

रॉस/जॉस के अनुसार,

- "किशोरावस्था शैशवावस्था की पुनरावृति है।"
- "किशोर समाज सेवा के आदर्शों का निर्माण व पोषण करते है।"
- विकास की बाल्यावस्था को 'मिथ्या परिपक्वता' अवस्था कहा जाता है

किलपैट्रीक के अनुसार, "किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल है।"

स्टेनले हॉल के अनुसार, "किशोरावस्था संघर्ष, तनाव, तूफान की अवस्था है।"

स्किनर के अनुसार, "किशोर को निर्णय का कोई अनुभव नही है।"

क्रो एंड क्रो के अनुसार,"किशोर ही वर्तमान की शक्ति व भावी शक्ति की आशा को प्रदर्शित करता है।"

रैडके के अनुसार, जब बच्चों को जिम्मेदारी दी जाती है, तो घरेलू वातावरण में उनका व्यवहार बेहतर हो जाता है। इससे बच्चों में अच्छा समायोजन और आत्मनिर्भरता विकसित हो जाती है|

एरिक्शन के अनुसार,"किशोरावस्था में किशोर स्वयं के व्यक्तित्व का स्पष्टीकरण चाहते है।"

Toppers Notes Unleash the topper in you

किशोरावस्था की विशेषता

- दलभक्ति की अवस्था
- सामाजिक स्वीकृति की अवस्था
- सुनहरी अवस्था
- विकासात्मक व्यवहार
- उथल-पुथल की अवस्था
- तार्किक चिंतन की अवस्था
- आत्म सम्मान एवं आत्म स्वीकृति की अवस्था
- सहयोग, टीम भावना और सामाजिक अभिवृत्ति
- व्यक्तिगत एवं घनिष्ठ मित्रता की अवस्था
- प्रबल दबाव, तनाव की अवस्था
- संवेगात्मक परिवर्तन की अवस्था
- द्रुत एवं तीव्र विकास की अवस्था
- शारीरिक व मानसिक विकास में तीव्रता (बिग एवं हंट)
- ईश्वर व धर्म में विश्वास
- समाजसेवा की भावना
- अपराधी प्रवृति का विकास
- स्थिरता एवं समायोजन का अभाव
- व्यवहार में भिन्नता
- चहुमुखी विकास
- वीर पूजा
- विषमलिंगी सद्भावना
- व्यक्ति परिवार व अपने आंतरिक मानदंडों पर प्रश्न करना
- दिवास्वप्न की अधिकता
- प्रतियोगी भावना एवं नेतृत्व करना
- अनैतिक कार्य एवं आत्महत्या करना

किशोरावस्था के उपनाम

- जीवन की बसन्त ऋतु
- जीवन का स्वर्ण काल
- Teen Age
- समस्या समाधान की आयु
- संक्रमण की आयु
- जीवन का सबसे कठिन काल किलपैट्रिक
- देवदूत अवस्था
- वीर पूजा की प्रवृत्ति
- देशभक्ति की भावना
- दबाव, तूफान व संघर्ष की अवस्था
- सर्वाधिक काम प्रवृत्ति
- समायोजन का अभाव

प्रौढ़ावस्था:

- यह अवस्था 21 वर्ष से 40 वर्ष तक की होती है। इस अवस्था में व्यक्ति अपने कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वाह कर सकता है।
- जन-जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में वह स्वस्थ समायोजन स्थापित करता है तथा विभिन्न उपलब्धियों को प्राप्त करने में सक्षम होता है।

मध्यवस्था, उत्तर मध्यवस्था :

- यह अवस्था 41 से 64 वर्ष तक की होती है। इस अवस्था में व्यक्ति के अंदर शारीरिक तथा मानसिक परिवर्तन होते हैं। इस समय व्यक्ति सुखमय और सम्मानजनक जीवन की कामना करता है।

वृद्धावस्था:

- यह अवस्था 65 वर्ष के बाद की होती है। इसे जीवन की अंतिम अवस्था के रूप में जाना जाता है। इस अवस्था में याददाश्त कमजोर होने लगती है तथा शारीरिक और मानसिक क्षमताओं में कमी आने लगती है।

महत्वपूर्ण शैक्षिक विचारक

- **फ्रोबेल** ने खेल, विशेषकर गेंद के खेल, को बाल-विकास में महत्त्वपूर्ण माना।
- **जॉन डीवी** ने शिक्षण को अनुभव, जाँच और सृजन की प्रवृत्तियों से जोड़कर देखा।
- **विलहेल्म वुंट** ने मनोविज्ञान को एक स्वतंत्र प्रयोगात्मक विज्ञान के रूप में स्थापित किया।
- **ड्वाइट डब्ल्यू. एलेन** को सूक्ष्म-शिक्षण के विकास से जोड़ा जाता है।
- **गुड एंड पावर** के अनुसार सक्रिय और सामाजिक रूप से प्रेरित विद्यार्थी बाह्य गतिविधियों में अधिक भाग लेते हैं।
- **मागरेट मीड** ने सांस्कृतिक कारकों के महत्व पर बल दिया।